गतिविधि : 2013

'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पांचवां भारतीय लेखक शिविर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय मनीषा के प्रतीक पुरुष पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस (मकर संक्रान्ति) के अवसर पर 'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' विषय पर केन्द्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पंचम भारतीय लेखक शिविर 13 से 15 जनवरी, 2013 तक रथयात्रा, वाराणसी के कन्हैया लाल गुप्ता मोतीवाला स्मृति भवन एवं श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी के सभागार में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न प्रान्तों (दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, मिजोरम, मेघालय आदि) के 200 से अधिक विद्वानों, रचनाकारों, प्रतिभागियों और स्थानीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए मध्य प्रदेश कला परिषद के अध्यक्ष कपिल तिवारी ने कहा कि परम्परा को जाने बिना उसका विरोध जितना घातक है उतना ही घातक है उसके बिना उसके ध्वजाधारी की भूमिका निभाना। भारतीय लोक ने ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के अपरिमित शास्त्रों की रचना की है। उनमें भारतीयों की रूचि का अभाव किसी खतरनाक संकेत की तरह है। उन्होंने रामचरित मानस को एक ऐसे महाकाव्य के रूप में प्रस्तावित किया जिसमें समस्त शास्त्रीय ज्ञान को रस में बदल दिया गया है। रामायण एक ऐसी कथा है जो कहती है कि क्या करना चाहिये और महाभारत एक ऐसी कथा है जो हमें यह बताती है कि क्या नहीं करना चाहिये। ये दोनों महाकाव्य लोक और शास्त्र के समन्वय के अप्रतिम उदाहरण हैं। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि श्री पृथ्वीश नाग, कुलपति, म.गाँ.काशी विद्यापीठ ने एक भूगोलवेत्ता के रूप में उन अनुभवों को सामने रखा जिनमें उन्हें लोक के अध्ययन से अपनी भौगोलिक योजनाओं को पूरा करने में सहयोग मिला। उन्होंने सिद्ध किया कि लोक और शास्त्र का समन्वय वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी न सिर्फ कारगर बल्कि जरूरी है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए भोजपुरी-मैथिली अकादमी के निदेशक एवं सुभारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री गिरिश चन्द्र श्रीवास्तव ने लोक और शास्त्र को मनुष्यता के लिए माता-पिता का दर्जा दिया। उन्होंने पण्डितजी के रचना संसार के आधार पर लोक और शास्त्र संबंधी जागरूकता के लिए कई मोरचों पर सक्रियता की जरूरत बताई।

उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ श्री जयेन्द्रपति त्रिपाठी के वैदिक और उमापति दीक्षित के पौराणिक मंगलाचरण से हुआ। विषय को प्रस्तावित करते हुए डॉ. अरूणेश नीरन ने बताया कि लोक और शास्त्र को परस्पर विरोधी मानने के प्रयत्नों की निरर्थकता पंडितजी के रचना संसार से सहज ही प्रमाणित हो जाती है। शास्त्र लोक की देन है, वही उसकी रचना करता है, पुनर्रचना करता है और उसे विजड़ित न होने देने की जिम्मेदारी निभाता है। इस सत्र का संयोजन और संचालन प्रसिद्ध रंग समीक्षक प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किया।

प्रथम आकदमिक सत्र में लोक और शास्त्र के स्वरूप और सम्बंध-परस्पर पर गहन विमर्श हुआ। हैदराबाद से आये श्री जगदीश डिमरी ने शास्त्र की और देवरिया से आयीं प्रेमशीला शुक्ल ने लोक की अवधारणा को स्पष्ट किया, दोनों को एक व्यापक और विकसनशील अर्थ में लेने का आग्रह किया। दोनों ने पं. विद्यानिवास मिश्र के रचनात्मक साख्य से लोक और शास्त्र सम्बंधी कई भ्रांतियों का निराकरण करने की कोशिश की। प्रो. शिवजी उपाध्याय ने बहुत विस्तार से इन दोनों की अवधारणा से सम्बंधित शास्त्रीय पक्ष को प्रकट किया। प्रो. माणिक गोविंद चतुर्वेदी ने विषय के भाषा वैज्ञानिक पक्ष को उद्घाटित किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अच्युतानन्द मिश्र (लखनऊ) ने लोक और शास्त्र के अन्तर्सम्बंध को अनेक उदाहरणों के जरिये स्पष्ट किया। इस सत्र का सफल संचालन 'सोच विचार' पत्रिका के सम्पादक डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र ने किया।

दूसरे आकदमिक सत्र का विषय था- 'लोक और शास्त्र : शास्त्र में लोक'। पुणे से पधारी मालती शर्मा ने शक्ति और शिव के रूपक के जरिये लोक और शास्त्र को समझाया व कहा, 'जिस प्रकार शक्ति के बिना शिव शव है, उसी प्रकार लोक के बिना शास्त्र। डॉ. गिरीश्वर मिश्र (दिल्ली) से समकालीन परिप्रेक्ष्य में बिना किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त हुए लोक और शास्त्र दोनों को उनकी गतिशीलता में समझने पर बल दिया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने भोजपुरी अवधी के अनेक लोकगीतों, कहावतों और संस्कृत साहित्य की विभिन्न सूक्तियों के माध्यम से लोक में शास्त्र और शास्त्र में लोक की

You are using demo version
Please purchase full version from www.technocomsolutions.com

उपस्थिति को रेखांकित किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में वक्ताओं द्वारा उठाये गये विभिन्न बिन्दुओं को समेटते हुए प्रो. रामदेव शुक्ल ने अनुभव संसार और साहित्य संसार दोनों से लोक में शास्त्र और शास्त्र में लोक की पैठ के जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किये। सत्र का संयोजन एवं संचालन डॉ. शशिकला पाण्डेय ने किया।

तीसरा सत्र युवा समवाय के रूप में सम्पन्न हुआ। सत्र की शुरुआत में सुषमा कुमारी एवं शुभंकर बाबू ने अपने आलेखों का वाचन किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में मारीशस से पधारीं हुसिला देवी ने लोकगीतों की प्रस्तुति के साथ मारीशस में हिन्दी भोजपुरी की स्थिति का वर्णन किया। अमरकण्टक से आये प्रो. तीर्थकेश्वर सिंह ने छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी के अर्न्तसंबंध के विविध आयामों को उद्घाटित किया। उन्होंने लोक और भाषा और लोक संस्कृति के गहन तत्वों तक पहुंचने के उपायों से भी रूबरू कराया। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी (मुम्बई) ने भोजपुरी लोकगीतों के वैशिष्ट्य निरूपण के साथ युवा समवाय में निबन्ध प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में उनकी कमियों और विशेषताओं पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. बलराज पाण्डेय ने कहा कि, 'भोजपुरी गीतों में जो रस और आत्मीयता है, लोगों को एक दूसरे से जोड़ने की जो क्षमता है, वह दुर्लभ है। इस सत्र का संचालन डॉ. छोटेलाल पाल ने किया।

आयोजन के दूसरे दिन पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस के अवसर पर स्मृति संवाद का आयोजन हुआ। इसमें डॉ. काशीनाथ सिंह ने पंडित जी के साथ अपने आत्मीय संस्मरणों को श्रोताओं से साझा करते हुए उन्हें अग्रज गुरू और अपने अभिभावक के रूप में याद किया। उन्होंने पंडितजी को साहित्य का सर्वाधिक लोकतांत्रिक व्यक्तित्व बताया। परम्परा और आधुनिकता के बीच उनके अनुसार, पंडितजी जैसा सामंजस्य शायद ही किसी ने किया और जीया भी हो। डॉ. श्री रंजन सिंह (पटना) ने पंडितजी के साथ पारिवारिक सम्बंधों को अपने सुसंस्कारों का श्रेय दिया। बी.एच.यू. के एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के निदेशक डॉ. अरुण वर्धन शर्मा ने अनेक प्रसंगों के माध्यम से पंडितजी के आत्मीय, स्नेहिल और विनोदपूर्ण व्यक्तित्व को याद दिया। प्रो. सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने पंडितजी की रचनाओं में एक धड़कते और दमकते हुए भारत की छवि को रेखांकित किया। पंडितजी को संस्कृत के साथ हिन्दी और पाश्चात्य साहित्य संपदा को जोड़ने का भी श्रेय है। प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी ने पंडित जी के एक निबन्ध 'हल्दी, दूब और दधि-अक्षत' के ब्याज से उनके व्यक्तित्व की कई विशेषताओं का स्मरण किया। ओ.पी. द्विवेदी (जम्मू) के अनुसार पंडितजी के चरण और आचरण दोनों पवित्र थे। श्रीमती मालती शर्मा ने पंडितजी के व्यक्तित्व के चित्रों की बहुत भावपूर्ण ढ़ंग से व्याख्या किया। सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि मॉरीशस की सरिता बुधु ने अपने व्यक्तित्व के निर्माण का श्रेय पंडितजी के स्नेह और दिशानिर्देश को दिया। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में पंडितजी के योगदान को हम सबके लिए प्रेरणात्मक बताया। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में पद्मश्री सुनीता जैन (दिल्ली) ने पंडित जी को वैसे ही याद किया जैसे एक बेटी अपने पिता को याद करती है। उनके मर्मस्पर्शी भावोदगारों ने समस्त श्रोता समुदाय को विगलित कर दिया। सत्र का कुशल संयोजन और संचालन डॉ. अरुणेश नीरन ने किया।

चौथे सत्र में साहित्य के विशेष संदर्भ में लोक और शास्त्र के सम्बन्ध में विचार किया गया। इसमें श्रीमती विद्याकेशव चिटको (नासिक) ने मराठी साहित्य का, डॉ. माधवेन्द्र पाण्डेय (शिलांग) ने पूर्वोत्तर भारत के साहित्य का और डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी (वर्धा) ने सूरदास के काव्य का संदर्भ लेते हुए उन्हें लोक और शास्त्र के निष्कर्ष पर परखा। डॉ. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी (दिल्ली), हरिश्चन्द्र मिश्र (शान्तिनिकेतन) और डॉ. चन्द्रकला त्रिपाठी (वाराणसी) ने साहित्य के संदर्भ में लोक और शास्त्र के समन्वय के विविध आयामों को सोदाहरण प्रस्तुत करते हुए विचार-विषय को प्रत्यक्ष किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने सत्र के विमर्श को समग्रता में समेटते हुए अखिल भारतीय लोक परम्परा और शास्त्र परम्परा को एक दूसरे के आधार और विस्तार के रूप में रेखांकित किया। सत्र का संयोजन एवं संचालन वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी ने किया।

पंचम सत्र कला के संदर्भ में लोक और शास्त्र के विवेचन पर केन्द्रित था। सत्र का प्रारम्भ करते हुए पृष्ठभूमि के रूप में संचालक डॉ. रामसुधार सिंह ने पं. विद्यानिवास मिश्र के इस वक्तव्य को उद्धृत करते हुए कहा कि शास्त्र जब रूढ़ होने लगता है, तो लोक उसे पुनर्जीवित करता है और लोक जब मर्यादा तोड़ने लगता है तो शास्त्र उसे नियंत्रित करता है। यह केवल साहित्य ही नहीं बल्कि कला के विविध पक्षों के साथ भी चरितार्थ होता है। विमर्श की शुरुआत करते हुए भारती गोरे ने महाराष्ट्र की समृद्ध साहित्यिक परम्परा और वहाँ के लोकगीतों के संदर्भ में कला और शास्त्र के संयोजन को व्याख्यायित किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने नामदेव से लेकर लोकतमाशा तक के उद्धरणों से पुष्ट किया। रामहित त्रिपाठी

You are using demo version
Please purchase full version from www.technocomsolutions.com

(बस्ती) ने शास्त्र और कला के अर्न्तसम्बंध को विवेचित करते हुए लोक के महत्व को स्थापित किया। भोपाल से पधारे बसन्त निरगुणे ने लोक प्रतीकों को उद्धृत करते हुए उसके भीतर छिपे मूल मंतव्य को रंखांकित किया तथा यह सिद्ध किया कि लोक के इन प्रतीकों को शास्त्र वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। डॉ. विद्याविंदु सिंह (लखनऊ) ने भारतीय परम्परा की साज्य कलाभिव्यक्ति पारम्परिक लोकगीतों से मानते हुए उदाहरण के रूप में अवधी और भोजपुरी लोकगीतों को प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने विस्तृत आलेख-पत्र में लोककलाओं की सार्थकता पर भी प्रकाश डाला। डॉ. मंजुला चतुर्वेदी (वाराणसी) ने ललित कलाओं के प्राचीन विकास का संदर्भ लेते हुए आधुनिकतम कला के विभिन्न पक्षों पर सारगर्भित वक्तव्य दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य के रूप में लोक कलाओं के संरक्षण तथा विकास के लिए समर्पित विद्वान् कपिल तिवारी ने लोक के व्यापक संदर्भ को रेखांकित करते हुए कहा कि लोक ही भारतीय संस्कृति का आधार है। वर्तमान बौद्धिकता पश्चिम की ओर देख रही है। अपने परम्परा के महत्त्व को हम भूलते जा रहे हैं। पं. विद्यानिवास मिश्र इस संदर्भ में बड़े रचनाकार थे कि वे लोक की भूमि पर खड़े होकर साहित्य की सर्जना कर रहे थे।

पंचम सत्र में बसन्त निरगुणे की पुस्तक 'लोक प्रतीक' का लोकार्पण पं. कमलेश दत्त त्रिपाठी, कपिल तिवारी एवं अच्युतानन्द मिश्र ने किया। इसी सत्र में निबन्ध प्रतियोगिता एवं पोस्टर प्रदर्शनी का पुरस्कार वितरण भी सम्पन्न हुआ।

तीसरे दिन 'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' पर चर्चा के साथ ही समापन समारोह का आयोजन श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज के सभागार में सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता प्रो. अवधेश प्रधान (बी.एच.यू.) ने ज्ञान-विज्ञान की अनेक पद्धतियों, शास्त्रों और इतिहास के अनेक संदर्भों के उल्लेख के साथ लोक और शास्त्र के आपसी रिश्ते को वैज्ञानिक ढ़ंग से व्याख्यायित किया। उन्होंने भारतीय जीवन की विविध शैलियों की विशिष्टताओं को भी उद्धृत किया और उनके शास्त्र गढ़ने और रचने की आवश्यकता पर बल दिया। हिन्दी भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ प्रो. श्रद्धानन्द ने कहा कि लोक की सबसे बड़ी खासियत उसका नैरन्तर्य है। उसका बहाव है। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण हमारे लोक और लोकानुशासनों को काफी नुकसान पहुँचा रहा है। युवा विचारक और आलोचक निरंजन सहाय ने शास्त्र की लोकोन्मुखता और लोक की शास्त्रोन्मुखता की व्याख्या की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार अनुवादक श्री शंकर लाल पुरोहित (भुवनेश्वर) ने की। श्री पुरोहित ने अपने वक्तव्य में बनारस और तुलसीदास को एक दूसरे का पर्याय व तुलसीदास को सबसे बड़ा समन्वयक बताया तथा कहा कि अनुवाद के द्वारा भारत की अन्य अनेक कलाएँ और संस्कृतियाँ भारतीय मानचित्र पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं।

अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. उदयन मिश्र ने, संचालन प्रकाश उदय ने तथा धन्यवाद ज्ञापन विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। कार्यक्रम में कालेज के छात्र-छात्राओं के साथ शिक्षकों, सहयोगियों की भी अच्छी भागीदारी रही। साथ ही इस सत्र में विद्याकेशव चिटको (नासिक), मालती शर्मा (पुणे) व अशोक नाथ त्रिपाठी (वर्धा) भी मौजूद रहे।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में 13 जनवरी की संख्या संगीत व 14 जनवरी की संध्या कविता के नाम रही। संगीत संध्या में डॉ. विजय कपूर (वाराणसी), डॉ. शांति जैन (पटना) और सुश्री जया शाही (बी.एच.यू.) ने अपनी लोकगीत गायकी से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कविसंध्या कविवर श्रीकृष्ण तिवारी के अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें गिरिधर करूण (देवरिया), अमर नाथ अमर (दिल्ली), रंजन सिंह व शांति जैन (पटना), अशोक सिंह 'घायल', बलभद्र, प्रकाश उदय, मंजुल चतुर्वेदी चपाचप बनारसी, अशोक अज्ञान आदि सहित दो दर्जन से अधिक कवियों ने काव्यपाठ किया।

आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान/लोककवि सम्मान

इस अवसर पर विद्याश्री न्यास द्वारा मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. कुसुम अंसल को उनकी रचना 'तापसी' के लिए पंचम आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान तथा प्रसिद्ध कवि तारकेश्वर मिश्र 'राही' को लोककवि सम्मान से अंगवस्त्र, श्रीफल, रुद्राक्ष, माला, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न के साथ पत्र-पुष्प सहित समादृत किया गया। आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति-सम्मान के अन्तर्गत रू. 21000/- की राशि प्रदान की गई। भारतीय लेखक-शिविर की एक उपलब्धि के रूप में इस वर्ष का युवा प्रतिभा सम्मान सुश्री .... को प्रदान किया गया।

You are using demo version
Please purchase full version from www.technocomsolutions.com

निबंध प्रतियोगिता एवं पोस्टर-प्रदर्शनी

अन्तर्भारतीय युवा समवाय के अन्तर्गत निबन्ध प्रतियोगिता में क्रमशः सुजित कुमार सिंह, आलोक सिंह, एवं कुलदीप सिंह प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं संगीता यादव व लक्ष्मण कुमार को सांत्वना पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

पूरे आयोजन में कविताओं एवं लोकगीतों को लेकर 'संभावना कला मंच' के कलाकारों द्वारा श्री बलभद्र के निर्देशन में रचे गये पोस्टर आकर्षण के विशेष केन्द्र बने रहे। डॉ. राजकुमार सिंह के संयोजन में राजीव कुमार गुप्ता, मनीष सिंह, शालिनी, सपना, एजाज अहमद, आशीष कुमार गुप्ता, कृष्ण कुमार पासवान, रवि कुमार चौरसिया, वरूण मौर्या, मीरा, जयश्री गुप्ता, फरहीन, अनीता और ब्रजेश कुमार जैसे युवा कलाकारों ने उस पोस्टर प्रदर्शनी को संभव किया।

'चिकितुषी' का प्रकाशन

न्यास की सांवत्सर पत्रिका चिकितुषी का छठा एवं सातवाँ अंक संयुक्तांक के रुप में किया गया।

संस्कृत कवि-गोष्ठी

14 फरवरी को वाराणसी में भारतीय वाङ्मय के मनीषी विद्वान पं. विद्यानिवास मिश्र की नवम पुण्यतिथि पर विद्याश्री न्यास द्वारा लहुराबीर स्थित गायत्री मंदिर में आयोजित संस्कृत कविगोष्ठी के अध्यक्ष के रूप में विचार व्यक्त करते हुए प्रो. शिवजी उपाध्याय ने कहा कि पण्डित जी संस्कृति एवं संस्कृत के शलाका पुरुष थे। वे काव्यपुरूष थे। श्री राम प्रवेश त्रिपाठी के मंगलाचरण से प्रारंभ कार्यक्रम में रचनाकारों का स्वागत कवि श्री श्रीकृष्ण तिवारी ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री उपेन्द्रनाथ पाण्डेय, शिवराम शर्मा, कौशलेन्द्र पाण्डे, गंगाधर पंडा, हरिप्रसाद अधिकारी, उमारानी त्रिपाठी, पवन कुमार शास्त्री, प्रवेश मिश्र, लेखनाथ कोडयाल ने अपनी कविताएँ सुनाईं। कार्यक्रम में सर्वश्री रमेश चन्द्र द्विवेदी, अजय मिश्र, नरेन्द्रनाथ मिश्र, जितेंद्रनाथ मिश्र सहित संस्कृत और हिन्दी के अनेक रचनाकार उपस्थित थे। संचालन प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने किया। विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने उत्तरीय और माल्यार्पण द्वारा रचनाकारों का सम्मान करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया।

पण्डित मधुसूदन ओझा स्मृति संवाद एवम् पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान

पं. विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में स्थापित 'विद्याश्री न्यास' एवं भारतीय मनीषा के गुरूत्रय- पं. मधुसूदन ओझा, पं. मोतीलाल शास्त्री एवं ऋषि कुमार मिश्र की स्मृति में स्थापित वैदिक ज्ञान-विज्ञान हेतु संकल्पित 'श्री शंकर शिक्षायतन' और ललित कला विभाग, म.गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी के तत्त्वावधान में दिनांक 27-28 नवम्बर, 2013 को पाँच अकादमिक सत्रों में 'पं. मधुसूदन ओझा स्मृति-संवाद' तथा 'संस्कृति और कला' विषय पर पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति-व्याख्यान और राष्ट्रीय परिचर्चा का आयोजन ललित कला विभाग, म.गां.काशी विद्यापीठ के सभागार में सम्पन्न हुआ।

पहले सत्र में पं. मधुसूदन ओझा के 'विज्ञान भाष्य' के विविध आयामों का विस्तृत परिचय देते हुए मुख्य वक्ता श्री धनंजय पाण्डेय ने धर्म और विज्ञान के सम्बंध-परस्पर के अनेक सूत्रों की गंभीर व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने इस संदर्भ में सरलीकरण के खतरों की तरफ संकेत करते हुए बताया कि ब्रह्म या ईश्वर विषयक अवधारणाओं के परीक्षण के लिए एक विशेष प्रकार की अधिकार-संपन्नता अपेक्षित है। धर्म, संस्कृति, कला आदि की समझ के लिए एक वैज्ञानिक चेतना आवश्यक है और वेदादि, शास्त्र इसी की प्रेरणा भूमि है। विशिष्ट वक्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने नारदीय सूक्त के परिप्रेक्ष्य में मानवमन की सूक्ष्मताओं तक हमारे वाङमय की सहज पहुंच का विवेचन किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. हरेराम त्रिपाठी ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पं. मधुसूदन ओझा के प्रदेय का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र में पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के रूप में 'संस्कृति और कला की भारतीय अवधारणा' विषय पर केन्द्रित अपने व्याख्यान में श्री कपिल तिवारी ने स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, गोपीनाथ कविराज, वासुदेव शरण अग्रवाल एवं आनन्द कुमार स्वामी की वैचारिकी के आधार पर भारतीय मनीषा के वैश्विक प्रभावों को रेखांकित किया। उनके अनुसार यही वह देश है जहाँ साधना के माध्यम से उस ज्ञान को पाया जा सकता है, जिससे संस्कृति का निर्माण होता है। अपनी सांस्कृतिक चेतना को कायम और कामयाब रखने के लिए जरूरी है कि जो समस्याएं हैं उन्हें ज्ञान विज्ञान के माध्यम से सुलझाया जाए। प्रो. मारुति नन्दन तिवारी ने चित्रकला के विशिष्ट संदर्भ में संस्कृति और कला की विस्तृत चर्चा की। संस्कृति के केन्द्रबिंदु के रूप में काशी की पहचान को उन्होंने रेखांकित किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. अवधेश

You are using demo version
Please purchase full version from www.technocomsolutions.com

प्रधान ने कला-संस्कृति की भारतीय अवधारणा में भाव की प्रधानता को नटराज और बुद्ध की मूर्ति-मुद्राओं के माध्यम से स्पष्ट किया।

तीसरे सत्र में श्री कपिल तिवारी ने संस्कृति के निर्माण में कला की भूमिका के विविध पक्षों को उद्घाटित किया। उन्होंने बताया कि हमारी संस्कृति की छाया में ही हमारी कला-परम्परा विकसित हुई है। इस देश के समाज, साहित्य और कला का बहुत बड़ा हिस्सा उस कृष्ण को समर्पित है, जिसने एक बन्दीगृह में स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में जन्म लिया और एक भयमुक्त, प्रेमाभिभूत समाज के निर्माण में स्वयं को खपा दिया। श्री वसन्त निर्गुणे ने कला के विविध उपादानों एवं संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों को रेखांकित करते हुए कहा कि कला ही संस्कृति को आधार देती है। विभिन्न लोककथाओं के माध्यम से उन्होंने कला और संस्कृति के अन्तःसम्बन्धों को अभिव्यक्ति दी। संस्कृति के बाहर जिन कलाओं का आविर्भाव हुआ उन्हें दीर्घजीवन नहीं मिल पाया। शब्द जहाँ तक ले जाने में समर्थ नहीं होता, कला हमें वहाँ तक ले जाती है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. राजेश्वर आचार्य ने संगीत, कला और संस्कृति-निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया।

चौथे सत्र में संस्कृति और कला के अन्तःसम्बन्धों पर विस्तृत चर्चा हुई। मुख्य वक्ता श्री कपिल तिवारी ने इस संदर्भ में चित्र, नृत्य, संगीत आदि विभिन्न कलाओं के व्यापक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करते हुए संस्कृति के साथ उनके सम्बन्धों का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में मिट्टी, पीतल, कांसा, काष्ठ के माध्यम से जनजाति कलाएँ किस प्रकार जनजातीय संस्कृति को आधार देती हैं। डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र ने कला को संस्कृति के लोक व्यवहार के रूप में रेखांकित किया। श्री शीतला प्रसाद पाण्डेय ने पण्डित विद्यानिवास मिश्र की पुस्तक 'तंत्र, कला और आस्वाद' का संदर्भ देते हुए विषय की कुछ और बारीकियों की तरफ ध्यान आकर्षित किया। प्रो. मंजुला चतुर्वेदी ने संस्कृति को जीवन शैली के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की उन विशेषताओं को उद्घाटित किया जो विश्व-संस्कृति को राह दिखाने वाली है। संस्कृति के विकास में कला और साहित्य सशक्त भूमिका को उन्होंने रेखांकित किया। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो. अजय कुमार सिंह ने कहा कि मानवीय चेतना ही कला और संस्कृति को जन्म देता है, चेतना ही कला का केन्द्रबिंदु है, मूलस्रोत है और उसी को ग्रहण कर पदार्थ या कला के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। इसी सत्र में प्रो. मंजुला चतुर्वेदी और प्रो. ए.के. सिंह की पुस्तक 'इण्डियन रिचुअल आर्ट' का लोकार्पण श्री कपिल तिवारी एवं श्री वसन्त निर्गुणे के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

पांचवे सत्र में आयोजन के केन्द्रीय विषय पर आयोजित खुली परिचर्चा में विद्वज्जन और छात्र-छात्राओं ने सोत्साह प्रतिभाग किया। निधि राय, ज्योत्सना मिश्र, अंशिका सिंह एवं ज्योति पाण्डेय ने आलेख प्रस्तुत किया तथा प्रशान्त राय, वन्दना तिवारी, सौरभ श्रीवास्तव आदि ने अपने प्रश्न, प्रतिप्रश्न एवं सम्मतियों से इस सारस्वत आयोजन को गरिमापूर्ण बनाया।

इस अवसर को श्री रौशन लाल रौशन और प्रो. मंजुला चतुर्वेदी के काव्य-पाठ ने एक अलग छवि प्रदान की।

इस आयोजन में संयोजन और संचालन का दायित्व श्री दयानिधि मिश्र, सचिव विद्याश्री न्यास ने निभाया। स्वागत श्री अनूप घोष ने और धन्यवाद ज्ञापन श्री सुनील विश्वकर्मा ने किया।

You are using demo version
Please purchase full version from www.technocomsolutions.com